



SEE MORE JESUS · WANTTOSEEMORE.COM

## बाइबल उद्यमविषये किं कथयति? — भाग: २ · Strong's Numbers सहित KJV शास्त्रवचनानि

भाग: २ · मूलभूतबाइबिलसिद्धान्तस्य आधारेण निर्मितः नूतनः अध्ययनः

उद्यमः — मौलिकं बाइबिलीयं सिद्धान्तम्

### प्रारम्भिकवचनम्

प्रत्येकः विश्वासी इमं प्रश्नं पृच्छति - कथम् अहं ज्ञास्यामि यत् अन्तिमकाले स्थास्यामि इति? ईश्वरस्य उत्तरं अनुभूतिः न भवति, सन्देहे च न स्थापितम् अस्ति। ईश्वरः उत्तरं मनुष्यस्य स्वहस्ते एव स्थापितवान्, तत् च उद्यमः इति सः वदति। तत् न केवलं शरीरस्य श्रमः, न च भ्रमणशीलं चित्तम्। तत् सम्पूर्णं हृदयम् एकस्मिन् वस्तुनि निविष्टं, अनुग्रहे अनुग्रहं संयोजयत्। ग्रन्थे आलस्ययुक्तस्य कृते कापि प्रतिज्ञा न कृता। आलस्यशीलः वदति - मार्गः कठिनः इति, स च शेते। परन्तु उद्यमशीलः जनः प्रातःकाले उत्तिष्ठति; सः अन्वेषते, सः रक्षति, सः श्रमं करोति, सः अध्ययनं करोति। प्राचीनभाषायां उद्यमशीलः पुरुषः शुद्धसुवर्णं च एकेन शब्देन उच्येते, यतो हि सुवर्णं मार्गे पतितं न प्राप्यते - तत् खनित्वा एव प्राप्यते। यत् त्वं खनितुं न इच्छसि, तत् त्वं अद्यापि न इच्छसि एव। यत् त्वं प्रतिदिनं खनसि, तत् ईश्वरः तव कृते निश्चितं करिष्यति। सः स्वयं पुरस्कर्ता इति स्वं आह्वयति - तद् एव तस्य स्वकीयं नाम - सः च उद्यमशीलान् प्रति स्वयं बद्धः अस्ति; एतानि कार्याणि कुरु, त्वं कदापि न स्वलिप्ससि; एतानि कार्याणि कुरु, द्वारं विस्तृतं भविष्यति। सः एव ईश्वरः यं इदम् अध्ययनं तव समक्षं स्थापयति। तत् अन्वेषय।

### त्रयः प्रश्नाः यान् इदम् अध्ययनम् उत्तरतिः

1. विश्वासिनः सुनिश्चितं कर्तुं यत्नं कर्तुम् आदिष्टाः सन्ति — तथा च एतानि कर्माणि यः करोति सः कदापि किं न करिष्यति?
2. नीतिवचनम् उद्योगिनः हस्तस्य, आत्मनः, विचाराणाञ्च विषये तथा आलस्यस्य विषये किं कथयति?
3. ईश्वरः कं पुरस्करोति, तस्य आगमनसमये उद्योगी कथं तेन प्राप्यते?

### स्थापितो पूर्व आधारः — तत्परता

उद्यमः (स्पूदे) = वेगः + तत्परता + उत्साहः — आलस्ययुक्तस्य मन्दस्य च विरुद्धम् (द्वितीयपत्रिः पितरस्य 1:5; सूक्तयः 12:24; सूक्तयः 6:6-11)।

आलस्यशीलः करदः भविष्यति + तस्य क्षेत्रं कण्टकैः आवृतं जातम् (Proverbs 12:24; Proverbs 24:30-34).

सः तेषां प्रतिफलदाता यस्ते तं यत्नपूर्वकम् अन्विष्यन्ति (इब्रिणः ११:६)।

आशायाः पूर्णनिश्चयं प्रति अन्तं यावत् तमेव यत्नं दर्शयत (इब्रिभ्यः ६:११-१२)।

उद्यमशीलाः भवत यत् यूयं तेन शान्त्या सह दृष्टाः स्युः (द्वितीयः पतरसः ३:१४)।

सर्वप्रयत्नेन स्वविश्वासे योजयत --> न वन्ध्यं न निष्फलम् (२ पतरसः १:५-८)।

स्वकीयाह्वानं मनोनयनं च स्थिरं कर्तुं यत्नं कुरुत --> यूयं कदापि न पतिष्यथ (पितरस्य द्वितीयपत्रस्य १:१०)।

अयं द्वितीयो भागः नूतनसाक्षिणां समूहेन तस्याः एव सत्यस्य पुष्टिं करोति।

### ग्रीकभाषायाः प्रमुखशब्दाः

“उद्यमः” — **G4710 spoude** — शीघ्रता, त्वरा, उत्साहः, तत्परता

नूतनभाषायाम् उद्यमः त्वराशब्दः अस्ति — सः त्वरां करोति, न विलम्बते।

“यत्नं कुरु” — **G4704 spoudazo** — त्वरां कर्तुम्, यत्नं कर्तुम्, त्वरितं तत्परं च भवितुम्

एकं पदम् अध्ययनस्य, श्रमस्य, प्रयत्नस्य, उद्यमस्य च अधस्तात् तिष्ठति — आदेशः एकः आदेशः एव।

“यत्नेन अन्वेषणम्” — **G1567 ekzeteo** — अन्वेषणं कर्तुम्, अन्वेषणं कर्तुम्, आकाङ्क्षां कर्तुम्

पुरस्कारः इच्छुकानां न भवति, किन्तु ये कार्यस्य अन्तं यावत् तं अन्वेषन्ते तेषामेव भवति।

“आलस्यपूर्णः” — **G3576 nothros** — शिथिलः, मन्दः, जडः

उद्यमस्य विरुद्धः शब्दः — श्रवणे मन्दः, अधिकारप्राप्तौ मन्दः; आलस्यवान् इच्छारहितः न, किन्तु सः क्रियारहितः अस्ति।

“दृढः” — **G949 bebaios** — स्थिरं, त्वरितं, दृढं

उद्यमः स्थिरीकृते वस्तुनि पर्यवस्यति — दृढीकृते आह्वाने, दृढे स्थिरे च लङ्गरे।

(मम व्यक्तिगताः विचाराः — आत्मना spoude (G4710, तत्परता) इति वृत्तम्, यस्यार्थः वेगः भवति, न तु zelos (G2205) इति, यस्यार्थः तापः भवति।

अग्निः चुल्ल्यां तप्तं ज्वलेत्, परन्तु कदापि न चलेत्। वेगः गच्छति। तत्परता न भवति गृहे हृदयस्य तापस्य परिमाणम् — अपि तु पादयोः गमनम् एव।)

### हिब्रूभाषायाः मुख्यशब्दाः

“उद्यमशीलः” — **H2742 charuts** — तीक्ष्णः, अग्रवत्, दन्तयुक्तशस्यमर्दनयन्त्रम् इव; तथा शुद्धं सुवर्णम् अपि, पृथिव्याः खनितम् इव; तथा निर्णयः अपि

एकं पदम् उद्यमी पुरुषः, शुद्धं सुवर्णम्, निर्णयस्य उपत्यका च भवति — इदम् अध्ययनं तत् सुवर्णं खनति।

“उद्यमः” — **H4929 mishmar** — रक्षकः, प्रहरः, रक्षणस्थानम्

“सर्वयत्नेन” इति “सर्वरक्षणेन” — नगरम् इव हृदये स्थापितः प्रहरः

“यत्नेन” — **H3966 me'od** — बलम्, सामर्थ्यम्, अत्यर्थम्

यः शब्दः एव “सर्वशक्त्या” इति अनूदितः — उद्यमः पूर्णबलयुक्तं प्रेम एव।

“प्रातः अन्वेषणम्” — **H7836 shachar** — कार्ये प्रातःकाले उत्थानम्, प्रातः अन्वेषणं कर्तुम्, उषःकाले इव

उद्यमी अन्वेषी उषसा सह उत्तिष्ठति; स प्रथमं मृगयते, न अन्ते।

“तिष्ठ” — **H8104 shamar** — कण्टकैरिव परितो वेषयितुं, रक्षितुं, अवधानं कर्तुं च

यत्नेन रक्षणं नाम ईश्वरेण उक्तस्य विषयस्य परितः कण्टकवाटं रोपयितुं तुल्यम्, यथा किमपि तत् न अपहरेत्।

### उद्घाटन-आधारः

2 Peter 1:10 তস্মাদ্ হে ভ্রাতৰঃ, যুযং স্বকীয়াহ্মানৱৰণযো দৃঢ়কৰণে বহু যতধ্বং, তৎ কৃৎৱা কদাচ ন স্বলিষ্যথ [G4417 ptaio ■]

[G949 bebaio ■] [G4704 spoudazo ■]

যত্নং কুরুত → যুগ্মাকম্ আহ্বানং বরণং চ স্থিৱং কুরুত → যদি যুযম্ এতানি কৰ্মাণি কুরুথ, তৰ্হি যুযং কদাপি ন পতিষ্যথ।

(মম ব্যক্তিগতা: বিচাৰা: — শব্দানাম্ অৰ্থ শৃণু: "যত্নং কুরু" ইতি স্পৌডাজো (G4704, যত্নং কুরু), ত্বরাং প্রযোক্তুম্; "স্থিৱম্" ইতি বেবৈওস্ (G949, স্থিৱম্), দৃঢ়ং শীঘ্রং চ; "স্বলতি" ইতি প্ৰৈও (G4417, স্বলতি), স্বলিতুম্। ত্বরাং কুরু, স্থিতিশ্চ দৃঢ়া ভবতি, পাদশ্চ কদাপি ন স্বলিষ্যতি। আহ্বানং বরণং চ ইশ্বৱস্য স্তঃ; তয়ো: স্থিৱীকরণম্ আহুতস্য যত্ন: এব অস্তি — ইদমেব সম্পূৰ্ণম্ অধ্যয়নম্ একস্যাং পঙ্কতৌ অস্তি।)

আদেশ: — অধ্যয়নং কুরু, যত্নং কুরু, সাবধানতয়া চর

A. 2 Timothy 2:15 অপৰং ৱ্ৰম্ ঐশ্বৰস্য সাক্ষাৎ স্বং পৰীক্ষিতম্ অনিন্দনীয়কৰ্মকাৰিণশ্চ সত্যমতস্য ৱাক্যানাং সন্নিভজনে নিপুণশ্চ দৰ্শয়িতুং যতশ্চ [G3718 orthotomeo ■] [G2040 ergates ■] [G4704 spoudazo ■]

অধ্যয়নং → ইশ্বৱস্য সমক্শং পৰীক্ষিত: → এক: কৰ্মকর: অলজ্জিত:, সত্যবচনস্য যথার্থং বিভাগং কুৱন্।

(মম স্বকীয়া: বিচাৰা: — অত্র "অধ্যয়নম্" ইতি কেবলং পুস্তকানি ন সূচয়তি। এতৎ স্পৌডাজো (G4704, "যত্নং কুরু") ইতি পদম্ অস্তি, তদেব পদং যত্নং "যত্নং কুরু" ইতি চ "যত্নবান্ ভব" ইতি চ অনূদিতম্ দৃশ্যতে — ত্বরায়া: প্রয়োগ: কৰ্তুম্, প্রযত্নং কৰ্তুম্। কৰ্মকর: স্বীকৃতো ভবতি, যতো হি স: সত্যস্য ৱাক্যে ত্বরাবান্ আসীত।)

B. Ephesians 4:3 প্রণয়বন্ধনে চান্নন ঐক্যং বন্ধিতুং যতধ্বং [G4704 spoudazo ■]

আত্মন: ঐক্যং ৱক্ষিতুং যত্নং কুৱন্ত: → শান্তে: বন্ধনে।

C. Ephesians 5:15 অতঃ সাৱধানা ভৱত, অজ্ঞানা ইৱ মাচৰত কিন্তু জ্ঞানিন ইৱ সতৰ্কম্ আচৰত [G199 akribos ■]

সাবধানতয়া চরত → মুখা ইব ন, কিন্তু জ্ঞানিন ইব।

(মম ব্যক্তিগতা: বিচাৰা: — akribos (G199, যত্নে), অত্র "সাবধানতয়া" ইতি অনূদিতম্, অস্য অর্থ: যথার্থত:, সম্যক্ ইতি — ন কিমপি শিথিলম্। যত্ন: কেবলং বেগ: ন ভবতি; প্রতিপদং কৃতা সাবধানতা এব যত্ন:।)

II. উদ্যমী: আলস্যশ্চ — সুভাষিতস্য নবীনং সাক্ষ্যম্

A. Proverbs 10:4 ↗ read this in your Bible

শিথিলহস্ত: → দরিদ্র: + উদ্যোগিন: হস্ত: ধনং কৰোতি।

B. Proverbs 22:29 ↗ read this in your Bible

স্বব্যাপারে উদ্যোগী পুরুষ: → স ভূপানাম্ অগ্রে স্থাস্যতি।

(মম স্বকীয়া: বিচাৰা: — অত্র "উদ্যমী" ইত্যস্য দ্বিতীয়: ইব্রীশব্দ: ৱৰ্ততি: মহির্ (H4106, উদ্যমী) — ত্বৱিত:, সজ্জ:, কুশল:। এষ: শব্দ: স্তোত্রাণাং "সজ্জলেখকস্য" ৱাকক: অস্তি। চাৱত্ (H2742, উদ্যমী) তীক্ষ্ণ: পুরুষ:, মহির্ সজ্জ: পুরুষ:। এক: শব্দ: প্রৱিশতি; অপর: ত্বৱয়া গচ্ছতি — উভৌ চ ৱাজানাং সমক্শং তিষ্ঠত:।)

C. Proverbs 27:23 ↗ read this in your Bible

ত্বং স্বমেষৱজানাং স্থিতিং জ্ঞাতুং যত্নবান্ ভব → স্বগোধনং সম্যক্ পশ্য।

III. আলস্যৱহিত:, অপিতু পৰিপূৰ্ণ: — অন্তং ৱাবত্ তত্পৱতা

A. Hebrews 6:19 সা প্রত্যাশাস্মাকং মনোনৌকাযা অচলো লঙ্গৰো ভূৱা ৱিচ্ছেদকৱস্ত্রস্যাভ্যন্তৰং প্রৱিষ্টো [G949 bebaio ■]

আত্মন: নাঙ্গুৱ:, নিশ্চিত: স্থিৱশ্চ।

B. Romans 12:8 তথা য উপদেষ্টো ভৱতি স উপদিশতু যশ্চ দাতা স সৰলতয়া দদাতু যন্তুধিপতিঃ স যন্ত্ৰেনাধিপতিৱং কৰোতু যশ্চ দয়ালুঃ স হৃষ্টমনসা দয়তাম্ [G4710 spoude ■]

য: শাসতি, স উদ্যমেণ শাসতাম্।

C. Romans 12:11 তথা কাৰ্য্যে নিৰালস্য মনসি চ সোদ্যোগাঃ সন্তঃ প্রভুং সেৱধ্বম্ [G2204 zeo ■] [G4710 spoude ■]

[G3636 okneros ■]

ব্যৱসায়ে অনলস: + আত্মনি উত্সাহযুক্ত: + প্রভুং সেৱমান:।

(মম বৈয়ক্তিকা: বিচাৰা: — অত্র "ব্যাপার:" ইতি শব্দ: স্পৌদে (G4710, তত্পৱতা) ইত্যেৱ অস্তি: স্বস্য তত্পৱতায়াং তন্দ্রালু: মা ভব। ইদম্ অনুশাসনং ৱাণিজ্যবিষয়কং ন ভৱতি। ইদং তু প্রভো: সেৱায়াম্ আত্মন: বেগবিষয়কম্ অস্তি।)

D. Jude 1:3 হে প্রিয়াঃ, সাধাৰণপৰিত্রাণমধি যুগ্মান্ প্রতি লেখিতুং মম বহুযত্নে জাতে পূৱৰ্বকালে পৱিত্রলোকেষু সমৰ্পিতো যো ধৰ্ম্মস্তুদৰ্থং যুযং প্রাণৱ্যথেনাপি সচেষ্টো ভৱতেতি ৱিনয়ার্থং যুগ্মান্ প্রতি পত্ৰলেখনমাৱশ্যকম্ অমন্যে [G4710 spoude ■]

অহং লিখিতুং সৰ্বং যত্নং কৃতবান্ → বিশ্বাসহেতো: যত্নেণ যুদ্ধধ্বম্।

**E. 2 Peter 1:19** অপৰম্ অস্মৎসমীপে দৃঢ়তৰং ভৱিষ্যদ্বাক্যং ৰিদ্ধ্যতে যুষ্মৎ যদি দিনাৰম্ভং যুষ্মন্মনঃসু প্ৰভাতীযনক্ষত্ৰসোদয়ঞ্চ যাবৎ তিমিৰমযে স্থানে জ্বলন্তং প্ৰদীপমিহ তদ্ ৰাক্যং সম্মন্যশ্চ তৰ্হি ভদ্ৰং কৰিষ্যথ **[G949 bebaio]**  
অধিকতৰং নিশ্চিতং ভবিষ্যদ্বাক্যম্ → যুয়ং তস্মিন্ প্ৰদীপে ইব যাবদ্ দিনম্ উদেতি তাবচ্ মনঃ নিধত।

#### IV. পুৰস্কৰ্তা — যো তস্য যত্নেন অন্বেষকান্ প্ৰতি ভবতি

**A. Matthew 7:8** যস্মাদ্ যেন যাচ্যতে, তেন লভ্যতে; যেন মৃগ্যতে তেনোদ্দেশঃ প্ৰাপ্যতে; যেন চ দ্বাৰম্ আহন্যতে, তৎকৃতে দ্বাৰং মোচ্যতে **[G2212 zeteo]**

যঃ কশ্চিত্ যাচতে স লভতে + যো মৃগ্যতে স বিন্দতি।

**B. Isaiah 55:6** ↗ *read this in your Bible*

যাবচ্ পৰমেশ্বৰঃ প্ৰাপ্তুং শক্যঃ তাবচ্ তং মৃগ্যধ্বম্ → যাবচ্ স সমীপে বৰ্ততে তাবচ্ তম্ আহ্বয়ত।

**C. Psalm 105:4** ↗ *read this in your Bible*

পৰমেশ্বৰং মৃগ্যধ্বং, তস্য বলং চ → তস্য মুখং সৰ্বদা মৃগ্যধ্বম্।

দ্বয়োৰ্মুখম্ — ৰক্ষণীয়াদেশঃ, দ্বয়োঃ তৃতীয়স্য চ মুখে স্থাপিতঃ

**Deuteronomy 4:9** ↗ *read this in your Bible*

স্বাভ্যাসং যত্নেন ৰক্ষ → যথা ন বিস্মৰে: + তান্ স্বপুত্ৰান্ শিক্ষয়।

**Proverbs 4:23** ↗ *read this in your Bible*

সৰ্বপ্ৰযত্নেন হৃদয়ং ৰক্ষ → তস্মাদেব জীবনস্য নিৰ্গমাঃ ভবন্তি।

**Jude 1:21** ঐশ্বৰস্য প্ৰেম্না স্বান্ ৰক্ষত, অনন্তজীৱনায চাস্মাকং প্ৰভো যীশুখ্ৰীষ্টস্য কৃপাং প্ৰতীক্ষধ্বং **[G5083 tereo]**

ঈশ্বৰস্য প্ৰেমে স্বান্ ৰক্ষত → অনন্তজীবন্যর্থং কৃপাং প্ৰতীক্ষমাণাঃ।

(মম ব্যক্তিগতাঃ বিচাৰাঃ — দ্বয়োঃ সাধুগণাঃ মুখে বচনং স্থাপিতং ভবতি; অত্ৰ তৃতীয়মপি মুখং তদেব বদতি: ত্ৰিগুণসূত্ৰং সৰ্বং ন ব্ৰুয়তি। মোশাঃ বদতি, স্বাভ্যাসং যত্নেন ৰক্ষ; নীতিবচনং বদতি, সৰ্বযত্নেন স্বহৃদয়ং ৰক্ষ; যহূদাঃ বদতি, ঈশ্বৰস্য প্ৰেমিণি স্বান্ ৰক্ষত। ত্ৰয়ঃ ৰক্ষণবিধয়ঃ, একা যত্নশীলতা। ভাষাঃ লক্ষয়ঃ পুৰাতনা ৰক্ষা শামৰ্ (H8104) নাট্ৰ (H5341) চ অস্তি — বেট্ৰন (বাটী) চ প্ৰহৰী চ; যহূদস্য ৰক্ষা তেৰেও (G5083) অস্তি — চক্ষুৰ্বে ৰক্ষণম্। দ্বৈ ভাষে, একঃ আদেশঃ: যত্ ঈশ্বৰেণ তুভ্যং দত্তং, তত্ ৰক্ষ।)

### छाया च पूर्तिश्च

भूमौ स्थितां छायां चिन्तय। त्वं तस्याः आकारं द्रष्टुं शक्नोषि, किन्तु केवलः आकारः न वदति यत् का वस्तु तां छायां करोति — सा एका वस्तु स्यात्, समानप्रमाणा अन्या वस्तु अपि स्यात्, यावत् त्वं केवलां छायां एव पश्यसि तावत् त्वम् अनुमानमात्रं कर्तुं शक्नोषि। सा छाया रहस्यमेव तिष्ठति यावत् सत्यं ज्योतिः स्वयं वस्तु ते दर्शयति। ततः त्वं पुनः छायां पश्यसि, पश्यसि च यत् सा सर्वदा तस्याः वस्तुनः आकार एव आसीत्। एतदेव पुरातननियमस्य चित्राणि सन्ति। तानि सत्याः छायाः सन्ति, सत्येन शरीरेण सत्यत आकारिताः — "आगमिष्यताम् वस्तूनां छाया इयम्; परन्तु शरीरं खीष्टस्य" (कलस्सिनः २:१७)। परन्तु छाया "न स्वयं प्रतिमा" (इब्रिणः १०:१), अतः न कोऽपि केवला छायाया सम्पूर्णं सत्यं ज्ञातुं शक्नोति। यदा खीष्टः आगतः, तदा ज्योतिषा शरीरं दर्शितम् — अधुना वयं पुनः छायां पश्यामः, पश्यामश्च यत् सा सर्वदा कस्य आकारं वहति स्म।

**Shadow Deuteronomy 6:17** ↗ *read this in your Bible*

यूयं स्वप्नोः परमेश्वरस्य आज्ञाः यत্নेन पालयिष्यथ।

**Fulfillment Titus 3:8** ৰাক্যমেতদ্ ব্ৰিহসনীযম্ অতো হেতোবীশ্বৰে যে ব্ৰিহসিতৰন্ত্ৰন্তে যথা সৎকৰ্ম্মাণ্যনুৰ্তিষ্ঠেয়ুস্তথা তান্ দৃঢ়ম্ আভ্ৰাপয়েতি মমভিমতং তান্যেৰোত্তমানি মানৱেভ্যঃ ফলদানি চ ভৱন্তি **[G5431 phrontizo]**

সত্ৰুৰ্মানুষ্ঠানে সাবধানাঃ → মনুষ্যেভ্যঃ শুভানি হিতকৰাণি চ।

(মম ব্যক্তিগতাঃ বিচাৰাঃ — সঃ এব পৰিশ্ৰমঃ, পৰিৱৰ্তিতঃ। মূসায়াঃ অধীনে সঃ প্ৰস্তৰাঙ্কিতানাং আজ্ঞানাং পৰিতঃ বৃত্তিম্ অৰক্ষত। খ্ৰীষ্টে সঃ পূৰ্ব বিহ্বসিতাত্ শ্ৰদ্ধাতঃ প্ৰবহতাং সত্ৰুৰ্মাণাং ৰক্ষণে সাবধানঃ ভৱতি। পৰিশ্ৰমঃ কদাপি ন লুপ্তঃ অভৱত্; সঃ পূৰ্ণঃ কৃতঃ অভৱত্। ব্যৱস্থায়াঃ পালনং জীবন্ত্যাঃ শ্ৰদ্ধায়াঃ কৰ্ম্মণাং ৰক্ষণং জাতম্।)

### समापनम्

**Isaiah 40:31** ↗ *read this in your Bible*

যে পৰমেশ্বৰ প্ৰতীক্ষতে তে স্ববলং নূতনং কৰিষ্যন্তি → ধাবিষ্যন্তি, ন চ শ্ৰান্তা ভবিষ্যন্তি।

2 Peter 1:11 यतो नूनं प्रकाशेणास्माकं प्रभोज्ञात् यीशुख्रीष्टस्यानन्तबाज्यस्य प्रवेशेन युयं सुकलेन योजयिष्यथ

[G2023 epichoregeo ■]

युष्मभ्यं सनातनराज्ये प्रवेशः प्रभूततया दास्यते।

(मम व्यक्तिगताः विचाराः — अत्र सम्पूर्णम् अध्ययनम् एकनिःश्वासेन वर्तते। ईश्वरः कमपि जनं न त्यक्तवान् यत् सः स्थास्यति न वा इति सन्दिग्धः तिष्ठेत्। सः तस्य जनस्य स्वहस्ते एव विषयं स्थापितवान् तं च उद्यमम् इति नाम दत्तवान्। उद्यमं कुरु, तेन आह्वानं दृढं भवति, पादश्च कदापि न स्खलति। हस्तं शिथिलं कुरु, तेन आत्मा कामयते किन्तु किमपि न प्राप्नोति। उद्यमशीलः हस्तः शासनं करोति; उद्यमशीला आत्मा पुष्टा भवति; उद्यमशीलः जनः राज्ञां समक्षे तिष्ठति। एतत् सर्वम् अतिक्रम्य ईश्वरः स्वयम् आत्मानं तेषां पुरस्कर्तारं नामयति ये तं अन्वेषयन्ति। अतः स्वहृदयं रक्ष, स्वात्मानं रक्ष, स्वयं रक्ष। अध्ययनं कुरु, यत्नं कुरु, सावधानतया चर। मा श्रान्तः भव, यतः शस्यच्छेदनस्य कालः निर्धारितः अस्ति। यः स्वयम् ईश्वरः त्वां धावितुम् आह्वयति सः प्रतिज्ञातवान् यत् धावनार्थं तव बलं पुनः नवीकरिष्यति, यावत् सनातनराज्यस्य प्रवेशद्वारं विस्तीर्णं उद्घाटयति।)

## अभ्यासप्रश्नावली

१. २ पतरस्य पत्रम् १:१० — स्वाह्वानं वरणं च कर्तुं यत्नं कुरुतः

- a) स्थिरः
- b) दृढम्
- c) प्रचुरम्

२. नीतिवाक्यानि १०:४ — उद्यमशीलस्य हस्तः:

- a) बहुमूल्यम् अस्ति
- b) शासनं करिष्यति
- c) धनवन्तं करोति

३. इफिसिनः ५:१५ — पश्यत तर्हि यूयं कथं चरथः

- a) सावधानतया, मूर्खवत् न, अपि तु ज्ञानवद्भिः इव
- b) प्रभोः योग्यं सर्वतोभावेन प्रसादजनकम्
- c) आत्मनि

4. 2 Timothy 2:15 — ईश्वरस्य समक्षं स्वयं परीक्षितं दर्शयितुं प्रयत्नं कुरु, तादृशं कर्मकारं यो न लज्जितव्यः, सम्यक् विभजन्:

- a) जीवनस्य वचनम्
- b) प्रतिज्ञावचनम्
- c) सत्यस्य वचनम्

5. मत्तिः ७:८ — यः कश्चन याचते, स प्राप्नोति, यश्च अन्विष्यति:

- a) विश्रामं प्राप्स्यति
- b) विन्दति
- c) पूर्णः भविष्यति

6. सूक्तयः ४:२३ — सर्वप्रयत्नेन स्वहृदयं रक्ष; यतोऽस्मात्:

- a) दुष्टाः विचाराः निर्गच्छन्ति
- b) जीवनस्य उत्पत्तिस्थानम् अस्ति
- c) जीवनस्य निर्गमाः सन्ति

7. यशायाह 40:31 — ये यहोवाम् प्रतीक्षन्ते ते स्वबलं नवीकरिष्यन्ति; ते:

- a) गरुडा इव पक्षैः ऊर्ध्वम् उत्पतन्ति
- b) राज्ञां समक्षं स्थातुम्
- c) कदापि न पतति

उत्तरकुञ्जिकाः 1-b, 2-c, 3-a, 4-c, 5-b, 6-c, 7-a

## एतत् अध्ययनं कथं शाखते

छाया कथं प्रकाशं जनयति: यत् प्रयत्नं पुरा प्रस्तरफलकयोः प्रति नियुक्तम् आसीत् (व्यवस्थाविवरणम् ६:१७), तत् इदानीं जीवद्विश्वासात् प्रवहन्तः सत्कर्मणि पालयितुं नियुक्तम् अस्ति (तीतः ३:८)। पालितः आदेशः पालितं सत्कर्म भवति।

नवीनः नियमः एतत् कथं उद्घाटयति: "यत्नं कुरु" इति स्वकीयेन आदेशपरिवारेण उद्घाटयते — अध्ययनं कुरु (द्वितीयतीमथियः २:१५), प्रयत्नं कुरु (इफिषिनः ४:३), सावधानतया चर (इफिषिनः ५:१५)। एकं पदं, स्पौदाजो (G4704, यत्नं कुरु), बहुधा उक्तम्।



शब्दाः कथं महत्त्वं धारयान्तेः उद्योगेन इब्रीशब्दः (चारुत्सु, H2742, उद्योगी) आपे शुद्धसुवर्णं, तौक्षणं, निश्चयं च अथेयाते। उद्योगाथ यूनानीशब्दः (स्पौदे, G4710, उद्योगः) वेगं अर्थयति। उद्योगी पुरुषः निश्चितः पुरुषः, यः चलति।

एतत् भवति कथं प्रयुज्यतेः सर्वयत्नेन स्वहृदयं रक्ष (नीतिवाक्यानि ४:२३)। व्यवहारे आलस्यं मा कुरु (रोमिणः १२:११)। यावत् सः लभ्यते तावत् प्रभुं अन्विष्य (यशायाः ५५:६)। यत्कर्म तव हस्तः कर्तुं लभते तत्रैव अद्यैव यत्नः आरभताम्।

अनन्तकालस्य कृते अस्य अर्थः एवम्: शाश्वते राज्ये प्रवेशः प्रभूततया सेवितः भविष्यति (द्वितीयपत्रः १:११)। उद्यमः केवलम् अस्य जीवनस्य निमित्तं न, अपि तु आगामिजीवनस्य निश्चयीकरणस्य निमित्तम् अस्ति।

पार्श्वमार्गः: "यत्नं कुरु" (स्पौदाज़ो, G4704) इति पदम् "आत्मनः ऐक्यं रक्षितुं प्रयतमानः" (इफिसिनः ४:३) इत्यस्य अपि पृष्ठे वर्तते — एतस्य एकस्य पदस्य कुटुम्बम् अनुसृत्य पत्रेषु सर्वत्र यत्नः कुत्र व्ययितः इति पश्यतु।

त्वं रक्षां प्राप्तुं किं कर्तव्यम्?

अस्माकं धर्मशास्त्राध्ययनं पश्यत — "परित्राणार्थं मया किं कर्तव्यम्?"

## SOURCES & CREDITS

Scripture: Sanskrit New Testament in Assamese Script (CC BY-SA 4.0) — a redistributable edition, looked up exactly and never machine-translated.

Alternate chapter/verse numbering reconciled with STEP Bible TVTMS (CC BY 4.0).

Strong's numbering & original-language data: OpenScriptures Hebrew Bible (CC BY 4.0); STEP Bible.org — TAHOT/TAGNT/TBESH/TBESG (CC BY 4.0); Robinson-Pierpont Byzantine Majority Text (Public Domain); Strong's dictionary, 1890 (Public Domain).

Typography: Google Noto fonts (SIL Open Font License 1.1).

© SEE MORE JESUS · wanttoseemore.com — shared under Creative Commons Attribution 4.0 (CC BY 4.0).